PLATE TECTONICS

UNIT-3

प्लेट विवर्तनिकी

- प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत
- प्लेटों के प्रकार
- प्लेटों की सीमाएँ
- प्लेटों में गति के कारण

1. प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत > प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत या प्लेट विवर्तनी गतियों की विचारधारा का विकास सन 1960 के दशक में अनेक विद्वानों द्वारा अमेरिका एवम् यूरोप में किए गये कार्यों के परिणाम से हुआ।

सर्वप्रथम हेस महोदय ने सन 1960 में विभिन्न प्रमाणों के आधार पर यह स्पष्ट किया कि समस्त महाद्वीप एवम् महासागर विभिन्न प्लेटों के ऊपर टिके हुए हैं। प्लेटों के प्रवाहित होने से महाद्वीप एवम् महासागरीय तली विस्थापित होती है।

इस सिद्धांत या गतियों की सहायता से महाद्वीपों एवम् महासागरों की वर्तमान एवम् प्राचीनकाल की स्थिति, महाद्वीपों का विस्थापन, पर्वत निर्माण एवम् ज्वालामुखी क्रिया आदि घटनाओं को अन्तः सम्बंधित मानकर समझाने का प्रयास किया गया है।

भूतल के प्रमुख भूखण्ड को प्लेट मानकर उनके वितरण स्वरूप को समझाने का प्रयास भी इसी समय हुआ।

"प्लेट" शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग टूजो विल्सन ने 1966 ई० में किया था। जबकि मार्गन महोदय ने "प्लेट विवर्तनिकी" शब्द से हमलोगों को अवगत कराया था।

उसी समय सन् 1968 ई० में मोर्गन, मैकेन्जी एवम् अन्य विद्वानों ने पृथ्वी तल पर महाद्वीपों एवम् महासागरों के तल को बनाने वाले 6 प्लेटों का 6 प्लेटों के रूप में बताया। जो इस प्रकार है।

प्लेटों के नाम	क्षेत्र (विस्तार)
1 यूरेशियन प्लेट	1. यूरोप एवम् भारत छोड़कर समस्त एशिया महाद्वीप का भूखण्ड
2 अफ्रीका प्लेट	2. अफ्रीका महाद्वीप एवम् इनके चारों ओर की महासागरीय तली।
3 इण्डो आस्ट्रेलियन प्लेट	3. भारत, आस्ट्रेलिया, हिंद महासागर तथा पश्चिमी प्रशांत महासागर की तली।
4 अण्टार्कटिक प्लेट	4. मध्य महासागरीय कटक के दक्षिण में स्थित सम्पूर्ण क्षेत्र
5 अमेरिकन प्लेट एवम्	5. उत्तरी एवम् दक्षिणी अमेरीका तथा पश्चिमी अटलांटिक
6 प्रशांत महासागरीय प्लेट	महासागरीय तली।
	6. सम्पूर्ण प्रशांत महासागरीय क्षेत्र।

विद्वानों द्वारा 6 बड़े प्लेटों तथा 14 छोटे प्लेटों की चर्चा की गई है और साथ ही यह भी बताया गया है कि इन प्लेटों की सहायता से या इन प्लेटों की भूमिका रही है महासागरों तथा महाद्वीपीय प्लेटों की रचना में।